रविवार, दिनाँक **26-05-2024** को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल, महाबीर जी दे नाल ओ रघुनाथ जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, प्रेम वैराग साँवले चरणां दा प्यार।

साँवले चरणां दा प्यार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, साँवले चरणां दी प्रीत रघुनाथ जी दे नाल।

रघुनाथ जी दे नाल, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, सम सन्तोष सत शास्त्र दा विचार।

सत शास्त्र दा विचार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, शब्द सुरति दा मिलाप रघुनाथ जी दे नाल।

रघुनाथ जी दे नाल, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, सिया राम लक्ष्मण संग होवन बलधार।

संग होवन बलधार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, बनिया रहे दासियां दा सत्संग नाल प्यार।

सत्संग नाल प्यार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

मैं दासी तुआडे चरणां तों वारी, संगतां लावन मेरे बलधारी।

अंजनी लाल अग्गूं साडी नमस्कार, अग्गूं साडी नमस्कार ।

हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

सजनों इस सत्य से तो आप सभी परिचित होंगे कि जिसके संग भी सुरत की लगन लग जाती है, उसी में ही मन मग्न रहता है। इस तथ्य के दृष्टिगत अपने वास्तविक स्वरूप को प्राप्त कर, दृढ़ता से हर क्षण उसी में स्थित बने रहने हेतु, हर सजन के लिये बनता है कि

वह सच्चेपातशाह जी की तरह हर घड़ी/हर क्षण/हर पल सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों की प्रवानगी में मग्न रहे। जानो जो भी सजन उनके वचनानुसार जीवनयापन करना सुनिश्चित कर लेता है, वह सहज ही निष्काम भाव अपनाकर, अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर लेता है। ऐसा इसलिए क्योंकि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का शास्त्र-विहित हर वचन आत्मिकज्ञान का स्वरूप है, स्त्रोत है। अतः एक-एक वचन को ध्यानपूर्वक पढ़ने-समझने और धारण कर व्यवहार में उतारने योग्य बनने के लिए हमें सुरत को उनके प्रति समर्पित रखने का पुरुषार्थ दिखाना होगा। जानो जैसे ही इस पुरुषार्थ में इन्सान सफलता प्राप्त कर लेता है, वैसे ही उसके मन में स्वतः आत्मतोष रूपी धन संचित होना आरम्भ हो जाता है। इसीलिए ऐसा इंसान अमीरों का भी अमीर कहलाता है और उसके मन में भौतिक संसार से कुछ भी प्राप्त करने की इच्छा कभी भी नहीं उठती। तभी तो वह केवल बाँटता ही बाँटता है और बाँटने से उसका यह अर्जित परमार्थी धन कई गुणा बढ़ता है।

इस संदर्भ में सजनों यदि हम खुद को देखें तों शास्त्र-विहित वचन या परमार्थी ज्ञान हम सब सुनते-पढ़ते हैं पर जब बाँटने की यानि उसे अन्यों तक पहुँचाने की बात आती है तो ऐसा करने में हम स्वयं को असक्षम पाते हैं क्योंकि उन वचनों/परमार्थी ज्ञान को हम अपने हृदय में ठहराने में ही असमर्थ होते है, तो ऐसे में दूसरों को क्या बाँटेंगे? अतः वचनों को खुद धारण करके, वर्त-वर्ताव में लाना, यह हमारे जीवन की प्राथमिकता होनी चाहिए। इसी से ही अच्छा परिणाम प्राप्त हो सकता है और हम जीवन के सुखानन्द का अनुभव कर सकते हैं। कहने का आशय यह है कि फिर जीवन अच्छा लगता है, चेहरा खिला रहता है और हृदय प्रसन्न रहता है। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों उनके वचनों को धारण कर व्यवहार में लाओ और इस तरह व्यवहार के माध्यम से अपने परिवारजनों, संगी-साथियों व समाज तक सकारात्मक संदेश पहुँचाओ। सजनों ऐसा करना अपना परम कर्त्तव्य मानो क्योंकि यही आपकी सफलता का सूचक है। इसके विपरीत यदि हम ऐसा पराक्रम दिखाने में स्वयं को असमर्थ पाते हैं तो मानो कि हमारा सत्संग में आना व्यर्थ है और यही व्यर्थता सालों साल सत्संग में आने के पश्चात भी, जीवन के अर्थ को सिद्ध न कर पाने का एकमात्र हेतु है।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों मानो कि अगर आपने यह क्रिया सही से की होती तो अब तक जीवन का लक्ष्य सिद्ध हो गया होता। ऐसा नहीं हुआ इसलिए इस भूल की क्षमा-याचना, जो आपकी सुरत का स्वामी है - परमात्मा, उससे यह वायदा करते हुए माँगो कि हे प्रभु ! मैं सुरत माया यानि दुनियाँ के छलावे में आकर, आज तक उलझी रही परन्तु आज मेरा

वायदा है कि आगे से यह भूल कदापि नहीं होगी। इस तरह क्षमा याचना करते हुए पति परमेश्वर से वायदा करो ताकि निघरी सुरत अपने घर में पुनः स्थित हो, अपनी वास्तविक शान को प्राप्त कर सके। इस शान को प्राप्त करने हेतु सजनों अब कमज़ोर मत पड़ना और सावधान रहना कि अब के बाद आपकी सुरत हर क्षण अपने सच्चे घर में स्थिरता से निरन्तर बनी रहे यानि भूलकर भी संसार की तरफ न दौड़े। इस विषय में हम मानते हैं कि आप आदत से मजबूर होकर फिर-फिर ऐसा करोगे पर हमारी मानो तो आत्मोद्धार के खातिर जो कहा है वैसा पुरुषार्थ दिखाने में कदापि नहीं सकुचाना और न ही किसी भी प्रलोभन में आकर हार खाना। यहाँ तक कि मोहवश होकर भी मत हारना यानि इस बुरी आदत को छोड़ने में ही अपनी भलाई समझना। सजनों मानो कि सबसे बड़ी हार तभी होती है जब इन्सान मोह-माया में उलझ जाता है। उसका इस प्रकार हारना जीवन की हार सुनिश्चित करता है। ऐसा न हो इस हेतु सजनों मोह-माया से आजाद बने रहो। जानो सुरत की आज़ादी होने पर ही जगत से आज़ाद रहकर अपने निर्धारित कर्त्तव्यों का सहर्ष समयबद्ध निर्वहन करना सहज हो पाता है। इस परिप्रेक्ष्य में जो भी मानव ऐसा कर दिखाता है, उस पर परमेश्वर सर्वदा प्रसन्न रहते हैं। अब जिस बच्चे पर माता-पिता प्रसन्न होते हैं, उस पर वह सब कुछ न्यौछावर करने को तत्पर रहते हैं। ऐसा सुनिश्चित करने पर आप भी उसी शान को प्राप्त हो सकते हो यानि जीव रूप में जगत से आज़ाद होकर परमात्म नाम कहा सकते हो। यकीन मानो सजनों जब ऐसा पुरुषार्थ कर लोगे तो फिर कोई भी जप-तप-संयम करने की आवश्यकता नहीं रहेगी क्योंकि तब आप अभेद हो जाओगे यानि आपका भेद कोई नहीं पा सकेगा। यही तो है अमोलक मानव चोला प्राप्तकर अपने वास्तविक स्थान, जिस हेतु यह चोला मिला, को प्राप्त कर लेने की बात। ज्ञात हो सजनों यह चोला महल-माड़ियाँ बनाने, माया या वस्त्र इकट्ठे करने हेतु नहीं मिला बल्कि नाम रूपी धन इकट्ठा करने को मिला है। अतः वही परमार्थी धन इकट्ठा करो और अपना हृदय-पात्र भर लो। इस तरह भरपूरता के भाव में आते ही आपको आत्म दर्शन हो जायेगा और आत्म-दर्शन होते ही आप स्वयं जान जाओगे कि परमात्मा और कोई नहीं अपितु मैं ही हूँ। केवल मैं ही नहीं यह भी है, वह भी है यानि हर वस्तु में मेरा वास है। इस तरह सब भिन्न-भेद व झंझट समाप्त हो जाएंगे और हम भी सजन, तुम भी सजन व सब सजनता के प्रतीक बन जाएंगे।

सजनों आप सब सपरिवार ऐसे बन सको, ऐसा सुनिश्चित करने के लिये व आपको मानसिक रूप से वैसा ढालने के लिये ध्यान-कक्ष में क्लास लग रही है। अतः यदि आप

पक्का इरादा कर लो कि इन क्लासों में जो युक्ति बताई जा रही है, हम उस युक्ति को घर-गृहस्थी के कार्य-व्यवहार करते हुए अवश्य अपनाएंगे और किसी कारण भी विलम्ब नहीं करेंगे तो आप कामयाब हो सकते हो। इस तरह सजनों जो बात बार-बार कहने पर आपकी स्मृति में नहीं बैठ रही यानि समझ नहीं आ रही, वह इस युक्ति को वर्ताव में लाने से समझ आ जाएगी व स्मृति में ठहर जाएगी। अतः क्लास की हर क्रिया को अफुरता से दिलचस्पी में आकर सुनना और अमल में लाना आरम्भ कर देना। इस परिप्रेक्ष्य में सजनों जो भी ऐसा कर दिखलायेगा तथा औरों को वैसा सुनिश्चित करने के प्रति जागृति में लायेगा, वह निःसन्देह परोपकारी नाम कहायेगा। चूंकि सजनों अब कलुकाल का अन्तिम चरण है, इसलिए हो सकता है कि यह अन्तिम युक्ति हो, अतः अपना मन-मस्तिष्क दृढ़ कर लेना यानि पक्का कर लेना कि मैं इसके लिये बिल्कुल तैयार हूँ। अब जो तैयार है, वह जयकारा बोलेगाः-

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

शहनशाह हनुमान बलवान है, ऊच्ची ओन्हां दी शान है।

उस दाते दा बेटा ओ रैहंदा क्यों हैरान है उस दाते दा बेटा ओ रैहंदा क्यों हैरान है।।

परउपकारी जिन्हां दा नाम है, परउपकारी जिन्हां दा नाम है।

उस दाते दा बेटा ओ रैहंदा क्यों हैरान है।

उस दाते दा बेटा ओ रैहंदा क्यों हैरान है।।

(अब सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी कह रहे हैं)

असां संग रहूं तुहाडे, तुसां संग रहो असाडे।

इको रूप कहाने हां, असां संग तुहाडे रैहने हां।

इको रूप कहाने हां, असां संग तुहाडे रैहने हां।।

भक्ति जेहड़ा सजन लैदा है फड़, शक्ति लैंदा धारण कर।

जेहड़ा वचन करे प्रवान, ओहदे कोलों भक्ति बड़ी बलवान।।

जेहड़ा वचन करे प्रवान, ओहदे कोलों शक्ति है बड़ी महान।

जैंदे कोलों शक्ति है ताकतवर, वैरी दुश्मन और बनचर उस सजन नूं किसे दा नहीं डर।।

जेहड़ा पकड़े अपने आप नूं इन्सान, ओहदे कोलों भक्ति है बड़ी बलवान।

जेहड़ा पकड़े अपने आप नूं इन्सान, ओहदे कोलों शक्ति है बड़ी महान।।

भक्ति सजन प्रबल फड़, फिर महाराज जी दा दर्शन कर।

जिन्हां सजनां ला लिया ध्यान, ओहदी भक्ति है बड़ी बलवान।

जिन्हां सजनां ला लिया ध्यान, ओहदी शक्ति है बड़ी महान।।

समभाव समदृष्टि फड़, बेख़ौफ़ा बेख़तरा विचर।

सजन शब्द है बड़ा महान, जैंदे कोलों भक्ति है बड़ी बलवान।

सजन शब्द है बड़ा महान, जैंदे कोलों शक्ति है बड़ी महान।।

शहनशाह हनुमान बलवान, ऊंची है जे ओन्हां दी शान।

है अमर ओन्हां दा नाम, हैन ओ शक्तिवान।

है अमर ओन्हां दा नाम, हैन ओ शक्तिवान।।

जिन्हां शक्ति नूं जान लिया, जिन्हां शक्ति नूं पहचान लिया।

ओ फिरदे ने मालो माली, ओ फिरदे ने मालो माली।

खालस सोना खोट न राहवे, ओ चाल चले निराली।।

शब्दः-

भक्ति सच धर्म दी कर, फिर इन्सान नूं मौत दा न रिहा डर।

शक्ति दा हथियार हाथों में फड़, बेख़ौफ़ा बेख़तरा जगत में विचर।।

सजनों इस कीर्तन के अंतर्गत भक्ति व शक्ति धारण करने की विधिवत् युक्ति का वर्णन किया गया है। फिर अन्त में कहा गया है कि जो भी सजन पुरुषार्थ दिखाकर भक्ति-शक्ति धारण कर लेता है उसको मौत का भय नहीं रहता यानि वह अमरता को प्राप्त हो जाता है। इस विषय में सजनों यदि मात्र इस कीर्तन को पढ़-समझकर व युक्ति को वर्ताव में लाने से हम भक्ति-शक्ति को प्राप्त करने में सफल हो जाते हैं तो बताओ कि इसके प्रति समय लगाना उचित है या अनुचित है?

'उचित है जी'।

उचित है, क्योंकि यह समय का सदुपयोग है। अभी तो हम दिन रात समय का दुरुपयोग कर रहे हैं और इसी कारण हर तरफ से दुत्कार मिल रही है। यही कारण है कि हम रोने-झुखने के स्वभाव में उलझे पड़े हैं व हमें दर-दर की ठोकरें खानी पड़ रही हैं। इस सन्दर्भ में सजनों यदि अपने जीवन के साथ तनिक भी प्यार है तो भक्ति-शक्ति धारण करने हेतु अवश्य समय निकालो और उस समय को इसी काम पर लगाओ। इसके साथ-साथ अपनी उन्नति की जाँचना भी करते जाओ। सजनों ऐसा करने से यानि तद्नुरूप ढलने से आपके भाव-स्वभाव में वांछित परिवर्तन आता जायेगा, दुःख छँटता जायेगा और सुखानन्द का अनुभव होना आरम्भ हो जायेगा। सजनों जानो कि आपको ऐसे ही सुखानंद नहीं मिलने वाला क्योंकि संसारी धन किसी प्रकार का भी हो, दुःख का हेतु ही होता है। अतः उस धन को इकट्ठा करने में जीवन को बर्बाद कर देना एक बोझ मात्र है। इतने बोझ को जीवन के अंत में उठाना भी मुश्किल हो जाता है। तो यह अपना बहुत बड़ा नुक्सान है। अतः सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होते हुए यह नुकसान मत करना।

सजनों अब जानो कि भक्ति-शक्ति धारण करने की आवश्यकता क्यों और किसे पड़ती है? - इस संदर्भ में सजनों ज्ञात हो कि जो भी सजन आत्मज्ञान से वंचित होता है, वह भौतिक रूप से चाहे कितना ही पढ़ा-लिखा क्यों न हो, अज्ञानी ही होता है क्योंकि उसके पास परिपूर्ण ज्ञान नहीं होता। उसका ज्ञान भौतिकी तक ही सीमित होता है। अज्ञानी ही भक्ति-भाव सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने हेतु यानि ज्ञानमय अवस्था में आने के लिये भक्ति अथवा साधना करता है। इस साधना द्वारा वह यथार्थ ज्ञान को प्राप्त करने में यानि जिस कुदरत

ने उसको उपजाया है, उसी कुदरत द्वारा प्रदान किया हुआ वेद-विदित ज्ञान पढ़ने व समझने में अपना समय लगाता है। इस तरह ज्यों-ज्यों उसके मस्तक की ताकी खुलती जाती है त्यों-त्यों उस ज्ञान की प्राप्ति के प्रति उसका लगाव बढ़ता जाता है। तद्नुसार अपनी चाहना पूरी करने के लिये वह और अधिक प्रयासरत होता जाता है। इस तरह जब इस पुरुषार्थ द्वारा वह आत्मज्ञानी हो जाता है तो उसे फिर भक्ति करने की ज़रूरत नहीं रहती क्योंकि ज्ञानमय अवस्था में आने पर वह कुदरत का सत्य, जीवन का सत्य व जीव-जगत-ब्रह्म का जो सत्य है, उन सबसे परिचित हो जाता है। ऐसे में भक्ति करने की आवश्यकता ही शेष नहीं रहती और वह अपने आप में सर्व-समर्थ यानि शक्तिशाली हो, सत्य का प्रतीक बन जाता है। ऐसा होने पर वह सजन परोपकार प्रवृत्ति में ढलकर अपनी शक्ति का सदुपयोग करता है और सबको सुख बाँटता है। इस सन्दर्भ में सोये हुए सजनों को जागृति में लाना उसकी प्राथमिकता होती है। उस समय जो ज्ञान शक्ति होती है, वही काम करती है। अब बात समझ में आई?

'हाँ जी'।

यह नहीं कि सारी उम्र भक्ति ही करते रहो क्योंकि कहीं न कहीं तो भक्ति समाप्त होनी चाहिये। कहीं तो सोऽहम् की समझ आनी चाहिये कि जो वह है, मैं भी वही हूँ और जो मैं हूँ, वह भी वही है। सजनों अगर अपनी वास्तविक शक्ति को पहचानना चाहते हो तो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति अनुसार ही भक्ति करो। क्योंकि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी भक्ति-शक्ति के राजे हैं। उनके राज-धर्म के अनुसार जीवन व्यतीत करो तो कहीं भी कोई मुश्किल नहीं आएगी। यह परिवर्तन का सूचक है। यह परिवर्तन सजनों धीरे-धीरे आ रहा है क्योंकि कलियुग सिमट रहा है यानि अज्ञानमय अवस्था लुप्त हो रही है और सतयुग आ रहा है यानि सत्य प्रकाशित होने वाला है। अतः समय रहते ही संभल जाओ। इस परिप्रेक्ष्य में सजनों जानो कि आज का काम कल पर मत छोड़ना वर्ना उलझ जाओगे। जानो कि अज्ञानमय अवस्था में किसी दूसरी व्यवस्था को धारण करने से कहीं न कहीं तो गड़बड़ हो सकती है क्योंकि हम नहीं जानते कि कहाँ सतर्कता की आवश्यकता है? सजनों अगर हम यह नहीं जानते तो कहीं न कहीं हम दूसरों के वश में आकर मात खा जाते हैं। इसीलिए कहते हैं कि समय पर काम करना उचित होता है। अब भक्ति द्वारा शक्ति धारण करनी है और इस हेतु मानसिक तौर पर अज्ञानमय अवस्था से उबर कर आत्मिकज्ञानी बनना है ताकि भक्ति समाप्त हो जाये। ऐसा करने से अपने आप आपके पास शक्ति आ

जाएगी। फिर उस शक्ति का इस्तेमाल करना है ताकि बाल-अवस्था से युवा-अवस्था आ जाए। अब आगे कीर्तन सुनोः-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

तेरा मेरा, मेरा तेरा, तेरा मेरा प्यार, जी ओ मेरा तेरा।

मेरा है प्यार महाराज जी दे नाल, हां हां तेरा मेरा।।

तेरा मेरा, मेरा तेरा, तेरा मेरा प्यार ओ प्यार।

तेरा मेरा, मेरा तेरा, तेरा मेरा प्यार, जी ओ मेरा तेरा।।

कोई ढूंड रिहा तुहानूं जंगलों में, ढूंडे नदी नाले पहाड़।

तुहाडे मिलने की खातर हिन, हिन ओ अव विचार, जी ओ तेरा मेरा।

तेरा मेरा, मेरा तेरा, तेरा मेरा प्यार, जी ओ मेरा तेरा।।

कोई लिटां वधावे कोई धूनियां लावे, कई भस्म रमा रमा गये ने हार।

तुहाडे मिलने की खातर हिन, हिन ओ अव विचार, जी ओ तेरा मेरा।

तेरा मेरा, मेरा तेरा, तेरा मेरा प्यार, जी ओ मेरा तेरा।।

कोई हकलां मारे कोई खड़ा पुकारे, कोई हकलां मारे कोई खड़ा पुकारे।

कोई पुकार रिहा, पुकारे ओ बारम्बार, जी ओ तेरा मेरा।

तेरा मेरा, मेरा तेरा, तेरा मेरा प्यार, जी ओ मेरा तेरा।।

हुन आलम रही पुकार, आ आ ओ परवरदिगार।

आ-आ-आ-आ-आ सच्ची सरकार जी ओ तेरा मेरा।

तेरा मेरा, मेरा तेरा, तेरा मेरा प्यार, जी ओ मेरा तेरा।।

(सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी श्री साजन जी को कह रहे हैं)

तेरा मेरा, मेरा तेरा, तेरा मेरा प्यार, जी ओ मेरा तेरा।

मेरा है प्यार हां-हां प्रेमियां दे नाल, ओ हो मेरा तेरा।।

सम ते सन्तोष होवे, धैर्य ते विचार होवे।

साडे नाल प्रेम ते प्यार होवे, तदों मैं देवां अपने प्यारियां नूं।।

देंदा राहवां दीदार जी ओ मेरा तेरा।

तेरा मेरा, मेरा तेरा, तेरा मेरा प्यार, जी ओ मेरा तेरा।।

नाम चलावे जो ध्यान लगावे नाम चलावे जो ध्यान लगावे।

ओ दर्शन पा रहे ने पा रहे ने बारम्बार जी ओ मेरा तेरा।

तेरा मेरा, मेरा तेरा, तेरा मेरा प्यार, जी ओ मेरा तेरा।।

अपने साथ सबको प्यार है या नहीं है?

'है जी'।

सजनों जिसके साथ प्यार होता है, उसको तो सम्भाल कर रखते हैं, सुन्दर रखते हैं व स्वच्छ रखते हैं। इस संदर्भ में जिसका हृदय मलिन है वह समझ लें कि उसका अपने साथ प्यार नहीं है। अगर वह कहता है कि मेरा अपने साथ प्यार है तो समझ लो कि वह झूठ बोलता है और झूठ बोलना महा पाप होता है। अब यह मत कहना कि हम दिनचर्या में पाप के अतिरिक्त अन्य कुछ करते ही नहीं यानि झूठ ही झूठ बोलते हैं। सत्संग में आने का अर्थ होता है - स्वार्थपरता छोड़ परमार्थ के रास्ते पर आगे बढ़ना। अन्य शब्दों में झूठ त्यागकर सत्य के संग प्रीत लगाना। इस विषय में सजनों अब तक आपको स्वार्थ के जितने भी शब्द हैं व उनके जो भी अर्थ हैं उन नकारात्मक शब्दों का ही बोध है और दिनचर्या में भी आप उन्हीं का ही प्रयोग करते हो। जिसके परिणामस्वरूप लड़ाई-झगड़ा, मन-मुटाव और तूं-तूं, मैं-मैं होती है व अजीब तरह का नकारात्मक वातावरण पनपता है। सजनों इस परिप्रेक्ष्य में आगे से आपके साथ ऐसा न हो यानि सब सकारात्मक सोच रखें उसके लिए आज से ध्यान-कक्ष के माध्यम से आपको परमार्थ के जो शब्द हैं उनसे परिचित कराया जायेगा। केवल शब्दों से ही नहीं अपितु अर्थ सहित परिचित कराया जायेगा ताकि उन शब्दों का अर्थ जीवन में उतारकर आप अपने जीवन को सार्थक बना सको। ज्ञात हो कि इस विधि द्वारा आप सब उखड़े दिलों को मिला सकते हो। सजनो यह सुनहरी अवसर है

अतः सार्थक जीवन जीने हेतु दिलचस्पी में आकर अपने आप को मजबूर करो कि आप उन शब्दों को समझकर व स्मृति में रखकर परस्पर व्यवहार के समय प्रयोग में लाने में सक्षम बनो। आज से यही प्रयास आरम्भ होने लगा है। इस हेतु आपको उत्साहित व प्रेरित करने के लिए सही उत्तर देने वाले को पुरस्कृत भी किया जायेगा। सब सजन चैतन्य होकर बैठना क्योंकि परमार्थ को समझने का यह शुभारम्भ एक अन्य तरीके से होने जा रहा है। सजनों इसके पश्चात इसका लाभ केवल आप तक ही सीमित न रह जाये, आपके परिवार के सदस्य, आपके संगी-साथी, दोस्त व सहेलियों तक भी पहुँचे उसके लिये चाहो तो उनका एक-एक ग्रुप बना लेना क्योंकि जितनी भी बार आज की बात दोहराओगे उतनी ही मज़बूती से यह शब्द अर्थ सहित आपकी स्मृति में ठहर जायेंगे और उन सबको भी लाभ पहुँचेगा। तदुपरान्त वह आपके साथ यहाँ आना पसन्द करेंगे और आपका परिवार बढ़ जायेगा।

समझ आई बात? अब यह ग्रुप आप नीति अनुसार या तो पाँच सजनों का बना सकते हो या फिर सात सजनों का और अधिक से अधिक ग्यारह सजनों का बना सकते हो। इससे ज्यादा सदस्यों का नहीं बना सकते अन्यथा भीड़ हो जायेगी। इस प्रकार ग्रुप में इन शब्दों पर चर्चा करो ताकि सबको बता-बताकर वे परमार्थी शब्द अर्थ सहित आपकी स्मृति में ठहर जायें और आपके मन में परमार्थ को व्यवहार में अपनाने का साहस उत्पन्न हो। सजनों जानो कि इस क्रिया से आप अर्थपूर्ण जीवन जीना आरम्भ कर दोगे यानि जीवन का मकसद हल हो जायेगा। सजनों यह आज से ही आरम्भ कर देना है क्योंकि महीने बाद अगली क्लास आ जानी है। तो आपके पास दो-तीन सप्ताह हैं। इस परिप्रेक्ष्य में आपके जो भी ग्रुप बने, एक, दो या तीन बार प्रयास करके शब्दावली अर्थ सहित पूरी तरह से अन्दर बिठा लेनी है और व्यवहार में उतारना आरम्भ कर देना है। ऐसा होने पर आप कलियुगी इंसान बनने के स्थान पर सतयुगी इन्सान बनते जाओगे, बनते जाओगे, व अन्यों को भी बनाते जाओगे और परमात्मा के सुपुत्र कहलाओगे। घरों में बैठे हर सजन ने यह काम करना है, हर शहर ने करना है और अपने किये का वीडियों बनाकर भेजना है, जैसे कि हवन के वीडियो आ रहे हैं। इस प्रकार परिवारों ने इकट्ठा बैठकर परमार्थ की बात करनी है। उदाहरण के लिये उस बातचीत में एक शब्द क्रोध को ले लो ताकि आपका मन शान्त रहे। पूरा परिवार बैठकर चर्चा करे कि क्रोध से किस प्रकार शारीरिक व मानसिक हानियाँ होती हैं। चर्चा करो कि क्रोध से आज तक किसी को कोई लाभ प्राप्त हुआ है? निःसन्देह क्रोध दुष्टाचार होता है। इसी तरह अगली गोष्टी में अगले सप्ताह लोभ पर चर्चा करो

ताकि परिवार के छोटे से छोटे बच्चे को भी मानवता के बारे में ज्ञान हो जाये और युवा-अवस्था में आते-आते वह मानवता का स्वरूप बनकर उभरे। अन्य कथा-कहानियाँ सुनने के स्थान पर इस क्रिया को अपनाओ। कई सजन ऐसा कर भी रहे हैं और उनको जब हम सुनते व देखते हैं तो बहुत अच्छा लगता है। आपको भी अनुभव होना चाहिये कि जो मैं बोल रहा हूँ वह मेरे लिये, मेरे परिवार के लिये व समाज के लिये लाभदायक है। इन्सानियत में आना चाहते हो तो यह क्रिया अवश्य करो। आप करो तो आपको भी हम देखेंगें। यह सोचकर सजनों आपको प्रसन्न होना चाहिये क्योंकि इस तरह हमारी पहचान पक्की हो जायेगी। अब यह क्रिया अवश्य सब करना।

आप सब ऐसा करने में कामयाब हों, यह हमारी शुभकामना है।